Statement

:: नम्र - निवेदन ::

भारतीय संस्कृति और साहित्य में लोकोत्तर गरिमा से मण्डित श्रीराम के महच्चरित्र के प्रति मेरे मन में बाल्यकाल से ही सहज अनुराग तथा विशेष रुचि रही है। कालान्तर में साहित्य का विद्यार्थी होने पर इस अनुराग तथा विशेष रुचि ने उनके महच्चरित्र के विस्तृत अध्ययन की प्रेरणा को जागृत किया। अध्ययन के उत्तरोत्तर क्रम में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी का कवि विशेष के रूप में विशेष अध्ययन करते समय हिन्दी रामकाव्य धारा की महत्व-पूर्ण कृतियों के सामान्य परिचय के अतिरिक्त इस धारा की मूल चेतना तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों से परिचित होने का अवसर मिला। लेखक का यह सौभाग्य ही था कि पी०एच०डी० उपाधि के लिये प्रस्तावित अनेक विषयों में से उसे उसकी रुचि के सर्वथा अनुकूल ही विषय प्राप्त हो सका। अस्तु, सर्व प्रथम लेखक महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के अधिकारियों तथा विशेषकर कला संकाय एवं हिन्दी विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रारम्भिक रूपरेखा परम श्रद्धेय स्व० आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, उपकुलपति विक्रम विश्वविद्यालय के अमूल्य परामर्श तथा मार्ग दर्शन में निर्धारित की गई थी, अस्तु उस साहित्य महारथी तथा संत मना महामानव की अहैतुकी कृपा के प्रति लेखक अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है। विभिन्न शोध संस्थानों, साहित्य संस्थानों तथा पुस्तकालयों एवं संग्रहालयों के अधिकारियों ने इस शोध कार्य में जो बहुमूल्य सहयोग तथा सहायता स्वतः प्रदान की है उनके प्रति लेखक हार्दिक आभार प्रकट करता है। इनमें से नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, यांत्रिक संग्रह नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, महाराजा बनारस पुस्तकालय रामनगर, वाराणसी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सरस्वती सदन, हरदोई, सरस्वती भण्डार, लक्ष्मणकोट, अयोध्या, जयपुर मन्दिर तथा कनक भवन-अयोध्या, दिगम्बर जैन मन्दिर (बड़ा मन्दिर) चूड़ी वाली गली, लखनऊ भारती भवन पुस्तकालय प्रयाग, भारती भवन पुस्तकालय छतरपुर, अनूप संस्कृत पुस्तकालय -बीकानेर, जिन चरित्र सूरि संग्रह बीकानेर के प्रति लेखक विशेषरूपसे

आभारी है। इसी प्रकार 'रघुवंश दीपक' के प्रकाशक आदरणीय बन्धु श्री रामभरोसे लाल गुप्त का भी इस कार्य में विशेष योगदान रहा है अत: उनके प्रति लेखक हार्दिक आभार प्रदर्शित करता है। श्रद्धेय डा० त्रिलोकी नारायण दीक्षित, हिन्दी विभाग-लखनऊ विश्वविद्यालय तथा श्रद्धेय श्री शिव बालकराम शुक्ल- के०जी०के० कालेज, मुरादाबाद के प्रति भी लेखक हार्दिक आभार प्रकट करता है जिनके अमूल्य सहयोग से कतिपय रचनाओं की दुर्लभ पाण्डुलिपियां सुलभ हो सकीं। कवि सहजराम जी की जीवनी से सबंधित बहुमूल्य सामग्री के संचयन में भाई रामभरोसे लाल गुप्त- प्रकाशक 'रघुवंश दीपक' तथा बन्धुआ ग्राम (सुल्तानपुर उ०प्र०) के सगरावाले बाबाजी का भी लेखक हृदय से कृतज्ञ है जिनकी सहायता से इससबंध की प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हो सकी ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निर्देशक श्रद्धेय डॉ० मदनगोपाल गुप्त, एम०ए०, पी०एच०डी०, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, म०स० विश्वविद्यालय, बड़ौदा के प्रति लेखक किन शब्दों में आभार प्रदर्शित करे ? व्यस्त से व्यस्त क्षणों में भी जिन्होंने इस कार्य की सतत् चिन्ता करते हुए, लेखक को निरन्तर उत्साहित तथा प्रेरित किया। वस्तुत: यह सम्पूर्ण शोध- प्रबन्ध उनके ही अनवरत् कठोर परिश्रम तथा योग्य मार्ग-दर्शन का परिणाम है। आदरणीय डॉ० दयाशंकर शुक्ल, एम०ए०, पी०एच०डी०, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, म०स० विश्वविद्यालय बड़ौदा का भी लेखक हृदय से आभारी है जिनके सत्परामर्श तथा सुखद संरक्षण में यह कार्य पूरा हो सका। इस प्रबन्ध के टंकन कार्य में मेरे मित्र तथा बन्धु शर्मा जी ने जो बहुमूल्य योगदान किया है उनके प्रति भी मेरा मन श्रद्धा से आभार प्रदर्शित करता है ।

सम्भव है कि टंकन कार्य में यत्र तत्र कतिपय भूलें तथा अशुद्धियां रह गई हो अत: उन्हें लेखक की विवशता समझ कर क्षमा करें, यह विनम्र निवेदन है।

निवेदक -

हरिवंश प्रसाद शुक्ल

हरिवंश प्रसाद शुक्ल